6

किताबों में चित्र क्यों होते हैं?

अक्षय कुमार दीक्षित*

रंग-बिरंगे चित्र देखते ही बच्चे किताबों की ओर आकर्षित हो जाते हैं। चित्र बच्चों को किताब पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, पाठ को विस्तार देते हैं और पाठ्य सामग्री को समझने में भी सहायक होते हैं। पुस्तक में दिए गए चित्रों का उपयोग शिक्षण में कई प्रकार से कर सकते हैं। इतना ही नहीं स्वयं तथा बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों का भी कला में उपयोग कर सकते हैं। यह लेख चित्रों की उपयोगिता पर आधारित है।

सूरज और अंजू तीसरी और दसवीं कक्षा में पहुँचे हैं। आज ही उनकी नई किताबें आई हैं। किताबें आते ही वे दोनों उनके पन्ने पलटकर देखने लगे। सूरज की किताबों में रंग-बिरंगे चित्र भरपूर मात्रा में थे। अंजू की किताबों में भी चित्र थे, पर सूरज की किताबों से कम, वह भी श्वेत-श्याम! अंजू ने कुछ देर अपनी किताबें देखीं, फिर सूरज की किताबें देखने लगी।

''तेरी किताबें कितनी सुंदर हैं। काश! मेरी किताबों में भी इतने सुंदर चित्र होते।''

''आपकी किताबों में भी तो चित्र हैं दीदी।''

''हाँ, हैं तो। पर बिना रंगों के हैं। तेरी किताब में तो रंगीन चित्र हैं, वह भी हर पन्ने पर।''

बड़ों और छोटे बच्चों की किताबों का यह अंतर आपने भी महसूस किया होगा। आखिर, यह अंतर क्यों होता है? क्या बड़ों को कम चित्रों की ज़रूरत होती है? क्या उन्हें रंग अच्छे लगने बंद हो जाते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने से पहले हमें यह जानना और समझना चाहिए कि किताबों में चित्र दिए ही क्यों जाते हैं।

किताबों के चित्रों की पहली उपयोगिता तो ऊपर दिए गए उदाहरण से ही स्पष्ट हो जाती है। चित्र पुस्तक को अधिक आकर्षक तथा रोचक बनाते हैं। चित्रों के कारण प्रत्येक व्यक्ति पुस्तक की ओर खिंचा चला आता है। किताब हाथ में आते ही व्यक्ति सबसे पहले उसके चित्र ही देखता है। परंतु केवल आकर्षण में वृद्धि ही चित्रों की एकमात्र उपयोगिता नहीं है।

चित्र किसी किताब की प्रकृति के बारे में

* *शिक्षक*, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, राजपुर, नयी दिल्ली।

पाठक को अपनी राय बनाने में मदद करते हैं। सबसे पहले पाठक की नज़र पुस्तक के आवरण पर पड़ती है। आवरण के चित्र, डिज़ाइन, रंग आदि द्वारा पाठक को पुस्तक के स्तर, विषय और उसकी पाठ्य सामग्री के बारे कुछ अनुमान हो जाता है। पुस्तक के आवरण पृष्ठ से आकर्षित होकर ही पाठक उसे उठाने और खोलने के लिए प्रेरित होता है। इस प्रकार चित्र, पाठक और पुस्तक की आत्मीयता बढ़ाने में सहायक होते हैं।

चित्र किसी रचना के विषय को विस्तार देने का भी कार्य करते हैं। आप सबने एक कहावत सुनी होगी–एक चित्र एक हज़ार शब्दों के बराबर होता है। यह कहावत केवल प्रतीकात्मक है। वास्तव में चित्र और शब्दों की तुलना हो ही नहीं सकती क्योंकि चित्र उन विचारों, भावनाओं और जानकारियों को भी संप्रेषित कर सकते हैं जिन्हें कई बार शब्दों द्वारा प्रकट करना असंभव हो जाता है। किसी सूचना या जानकारी के स्पष्टीकरण या उसके पूरक के रूप में चित्र का उपयोग किया जा सकता है। चित्रों द्वारा उन घटनाओं, व्यक्तियों या चरित्रों को भी प्रदर्शित किया जा सकता है जिनका किसी रचना में सीधे-सीधे ज़िक्र नहीं किया गया है। कहानी में बताई गई किसी घटना से पहले या बाद में क्या हुआ होगा, उसको भी चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। किसी एक चित्र या चित्रों की शृंखला द्वारा किसी प्रक्रिया को स्पष्ट किया जा सकता है। किसी इमारत, वस्तु, व्यक्ति आदि के छायाचित्र उसकी वास्तविक अवधारणा बनाने का कार्य करते हैं। इसी प्रकार किसी देश या राज्य की संस्कृति के बारे में समझ बनाने में वहाँ के चित्र–छायाचित्र आदि महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

भारत के प्रत्येक राज्य की अपनी अनूठी संस्कृति है। उनकी अपनी–अपनी चित्र शैलियाँ हैं जो उनकी संस्कृति के खास तत्वों को अपने में समाए हुए हैं। वरली, मिथिला (मधुबनी), पट्टचित्र आदि शैली के चित्रों को देखकर पाठक उस संस्कृति को करीब से महसूस कर सकता है। लोकशैली के चित्रों से परिचित होने पर उनकी रुचि उस शैली या संस्कृति में बढ़ पाती है। इस प्रकार सिमटती हुई सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और बढ़ाने का कार्य भी पुस्तक में दिए गए चित्र करते हैं।

जब पाठक पुस्तक में छपे चित्रों की ओर आकर्षित होता है तो उस चित्र को बार–बार देखना चाहता है। यदि चित्र प्रभावशाली है तो पाठक प्रत्येक बार उस चित्र के नए आयाम ढूँढ़ पाता है और हर बार उसे नएपन का अनुभव होता है। इस प्रकार एक प्रभावशाली चित्र पाठक के अवलोकन कौशल का भी विकास करता हैं।

कभी–कभी किसी चित्र को देखकर पाठक के मन में विस्मय या कौतूहल का भाव उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए अजंता के चित्र/छायाचित्र देखकर पाठक के मन में उन स्थानों को प्रत्यक्ष रूप से देखने की इच्छा उत्पन्न हो सकती है जो उसकी भावी योजनाओं, कार्यों और रुचियों को बनाने में सहायता करती हैं।

चित्र पढ़ना–लिखना सीखने में भी अनोखे ढंग से मदद करते हैं। आमतौर पर पहली कक्षा

की भाषा की पुस्तक में प्रारंभ में ही तीन-चार पृष्ठों में केवल चित्र ही होते हैं। ये चित्र बच्चों और बड़ों को बातचीत के अवसर उपलब्ध कराते हैं। बातचीत के द्वारा बच्चों की अवलोकन तथा विश्लेषण क्षमता का विकास होता है। दो आकृतियों के सूक्ष्म अंतर की ओर उनका ध्यान आकर्षित होता है। उसके बारे में बातचीत करते हुए वे कई परिचित तथा अपरिचित शब्दों का प्रयोग करते हैं तथा दूसरे बच्चों को उनका प्रयोग करते हुए सुनते हैं। इससे उनका शब्द भंडार बढ़ता है और उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। बातचीत द्वारा बच्चों के चिंतन, तर्क, कल्पना आदि मानसिक कौशलों का विकास होता है। चित्रों और अपने अनुभवों के आधार पर बच्चे अनुमान लगाकर पढ़ने का 'अभिनय' प्रारंभ कर देते हैं। यह कार्य पढ़ने के आधार का कार्य करता है। जब उनके अनुमान की पुष्टि होती है तो उन्हें अपार हर्ष तथा आत्मविश्वास का अनुभव होता है। यह आत्मविश्वास उन्हें आगे पढ़ने के लिए प्रेरित करता है। किसी कविता या कहानी के साथ दिए चित्र उसकी पंक्तियों के बारे में अनुमान लगाने में सहायता करते हैं। बच्चे उनके बारे में बातचीत करके स्वयं के अर्थ की रचना करते हैं।

चित्रों के आधार पर बातचीत केवल पहली कक्षा में ही नहीं बल्कि प्रत्येक स्तर पर उपयोगी होती है।

''यह बच्चा साइकिल पर इसलिए नहीं चढ़ रहा क्योंकि साइकिल बड़ी है।''
''मेरे पास भी मेरे पापा की बड़ी साइकिल है। मैं तो उसे चला लेती हूँ। मुझे लगता है यह लड़का इसलिए साइकिल पर नहीं चढ़ पा रहा क्योंकि उसे साइकिल चलानी नहीं आती होगी।''
''इसे साइकिल चलानी आती होगी, वरना यह लड़का साइकिल लेकर बाज़ार के बीच में कैसे पहुँच जाता।''
''हो सकता है इस साइकिल को इसने अभी-अभी खरीदा हो।''
''यह अकेला है, इसको साइकिल किसने दिलवाई होगी? यह ज़रूर घर से साइकिल लेकर आया होगा।''
''यह तो साइकिल पर चढ़ भी नहीं सकता। अगर इसने साइकिल चलाने की कोशिश भी की तो गिर पड़ेगा''

चित्रों के आधार पर बच्चों को कोई विशेष वस्तु या पात्र को ढूँढने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, चित्रों के आधार पर बच्चे तर्क कर सकते हैं, जैसे-बच्चा साइकिल पर क्यों नहीं चढ़ पा रहा है? स्वयं को चित्र के पात्रों के स्थान पर रखकर सोच-विचार कर सकते हैं जैसे-अगर तुम इस साइकिल पर होते तो क्या इसे चला पाते? भविष्यवाणी कर सकते हैं जैसे- अगर इस लड़के ने साइकिल चलाने की कोशिश की तो क्या होगा? तथा अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर अपने संस्मरण सुना सकते हैं जैसे-क्या तुमने कभी साइकिल चलाई है?

बातचीत के द्वारा बच्चे अपने विचारों और निरीक्षणों का आदान-प्रदान ही नहीं करते बल्कि दूसरों के विचारों और निरीक्षणों को स्वीकार या अस्वीकार भी करते हैं, उनके निरीक्षणों को चुनौती देते हैं और तर्क द्वारा अपने निरीक्षणों को सिद्ध करते हैं।

चित्र शिक्षण प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में उपयोगी होते हैं। इनका उपयोग पाठ की प्रस्तावना से लेकर मूल्यांकन तथा पुनरावृत्ति तक में किया जा सकता है। चित्र आधारित कुछ गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं-

(1) चित्र के आधार पर कहानी, कविता आदि लिखना।
(2) चित्र में दिखाई दे रही वस्तुओं की सूची बनाना।
(3) चित्र को देख उसका शीर्षक देना।
(4) चित्र के पात्रों के संवाद, नाम या विचार अपनी कल्पना से लिखना।
(5) चित्र में घटित घटनाओं के कारण बताना।
(6) चित्र में दिखाई गई घटनाओं से पहले या बाद में हुई घटनाओं का अनुमान लगाना।

उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि पुस्तक के चित्र बड़ों के लिए भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने छोटों के लिए। फिर भी बड़ों के लिए विकसित पुस्तकों में कम चित्र होते हैं। अधिकतर ऐसा अधिक सामग्री और तकनीकी सीमाओं के कारण किया जाता है। अब सवाल यह उठता है कि इस कमी को कैसे दूर किया जा सकता है? यदि पुस्तक में दिए गए चित्रों से आप संतुष्ट नहीं हैं तो बच्चों की मदद से आप अपना चित्र भंडार बना सकते हैं जिनका विविध रूप से प्रयोग कर सकते हैं। चित्रों को आप निम्नलिखित स्रोतों से भी प्राप्त कर सकते हैं-

- समाचार पत्र
- पत्रिकाएँ
- पुरानी पुस्तकें
- कैलेंडर
- इंटरनेट
- पोस्टर
- विज्ञापन
- पुराने फ़ोटोग्राफ़
- संस्थाओं के सूचनापत्र
- डिजिटल/ मोबाइल कैमरे से प्राप्त चित्र

स्वयं बच्चों और अध्यापकों द्वारा बनाए गए चित्र भी एक महत्वपूर्ण संसाधन सिद्ध हो सकते हैं जिनका शिक्षण प्रक्रिया के दौरान उपयोग कर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सकता है।

❑❑❑